

Padma Shri



SMT. PARBATI BARUA

Smt. Parbati Barua is India's First Female Elephant Mahout (Indian term for an elephant tamer and caretaker) and animal conservation activist. Overcoming gender stereotypes in the traditionally male-dominated field, she earned the nickname "Hasti Kanya" or "Daughter of Elephant" who has been taming wild elephants since she was just 14 years old.

2. Born on 14th March, 1953 in the Royal Family of Gauripur, Assam, to Late Prakritish Chandra Barua (Lalji), the last in the line of Rajahs of Gauripur to hold power, Smt. Barua is a graduate in Political Science from Gauhati University and one would have probably expected her to pursue academics. However, she was not quite cut out for that. Since her childhood, she had a keen sense of understanding and interest in elephants and spent much of her time in the jungles along with her father (Lalji) who was an eccentric hunter and had a supernatural understanding of elephants and had 40 elephants in his royal stables.

3. Smt. Barua first domesticated an elephant in Kochugaon forest (Assam) at the age of 14. Following this, from 1975 to 1978, she successfully tamed 14 wild elephants through Mela Shikar (a traditional and unique method of capturing wild elephants in Assam where the elephant is caught with a Lasso and not by using tranquiliser guns), operating in the forests of Assam (Darrang and Kochugaon) and North Bengal (Jalpaiguri and Darjeeling). She has trained more than five hundred elephants till date.

4. Smt. Barua has actively assisted forest officers in the care and herbal treatment of the newly tamed elephants along with the training of mahouts and field staff in Assam, Kerala, West Bengal, Uttaranchal and Uttar Pradesh, resulting in the resolution of several human-elephant conflicts. In recent years, she has also assisted the governments of Assam, Bihar and West Bengal in tackling rogue elephants or tending to the injured/ailing ones. She has attended various seminars and workshops, viz. the International Workshop on Elephants held in Jaldapara Sanctuary (West Bengal) in 1982, International Seminar on Asiatic Elephants organized by the Bombay Natural History Society in Mudumalai Sanctuary (Tamil Nadu) in June 1993 and has contributed two papers on the status of elephants of North Bengal. She represented India in the International Workshop on the Domesticated Asian Elephant at Bangkok, Thailand, organized by the F.A.O in February, 2001. She was a member of the Asian Elephant Specialist Group, International Union of Conservation of Nature (IUCN).

5. Smt. Barua is the recipient of numerous awards and honours which includes the Asom Gaurav (Highest State Civilian Award) 2023 from the Government of Assam. She received the United Nations Environment Program's (UNEP) award, "Global 500 - Roll of Honour" in 1989 for welfare and management of both wild and captive elephants. The Government of Assam felicitated her as the "Honorary Chief Elephant warden of Asom" for her lifetime work for Elephants on the 11th January, 2003. She was awarded the Life Time Achievement Award by Kolkata International Wildlife & Environment Film Festival (KIWEFF) and was also awarded with the "Nature's Warrior" Jury Award for Aparajita 2023.

पद्म श्री



श्रीमती पार्वती बरूआ

श्रीमती पार्वती बरूआ भारत की पहली महिला हाथी महावत (हाथी को सिधाने और देखभाल करने वाले के लिए भारतीय शब्द) और पशु संरक्षण कार्यकर्ता हैं। पारंपरिक रूप से पुरुष-वर्चस्व वाले क्षेत्र में लैंगिक रूढ़ियों को तोड़ने पर, उन्हें "हस्तिकन्या" या "डॉक्टर ऑफ एलीफेंट" उपनाम दिया गया, जो महज 14 वर्ष की उम्र से जंगली हाथियों को पालतू बना रही हैं।

2. 14 मार्च, 1953 को गौरीपुर, असम के शाही परिवार में गौरीपुर के राजाओं की वंशावली के अंतिम राजा स्वर्गीय प्राकृतिश चंद्र बरूआ (लालजी) के घर में जन्मी, श्रीमती बरूआ गुवाहाटी विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में स्नातक हैं और उनसे पढ़ाई जारी रखने की आशा की जा सकती थी। हालांकि, वह ऐसा नहीं चाहती थी। बचपन से ही, उन्हें हाथियों के बारे में अच्छी जानकारी और गहरी रुचि थी और उन्होंने अपना अधिकांश समय अपने पिता (लालजी) के साथ जंगलों में बिताया। उनके पिता एक मंझे हुए शिकारी थे और उन्हें हाथियों की बेहतरीन जानकारी थी और उनके शाही पशुखाने में 40 हाथी थे।

3. श्रीमती बरूआ ने 14 वर्ष की आयु में कोचुगांव के जंगल (असम) में अपने जीवन का पहला हाथी पालतू बनाया। इसके बाद, वर्ष 1975 से 1978 तक, उन्होंने मेला शिकार (असम में जंगली हाथियों को पकड़ने की एक पारंपरिक और अनूठी विधि जहां हाथी को ट्रैकिंगलाइजर गन का उपयोग करके नहीं बल्कि लासो से पकड़ा जाता है) द्वारा 14 जंगली हाथियों को सफलतापूर्वक पालतू बनाया। वह असम (दरांग और कोचुगांव) और उत्तरी बंगाल (जलपाईगुड़ी और दार्जिलिंग) के जंगलों में काम कर रही हैं। वह अब तक पांच सौ से अधिक हाथियों को प्रशिक्षित कर चुकी हैं।

4. श्रीमती बरूआ ने असम, केरल, पश्चिम बंगाल, उत्तरांचल और उत्तर प्रदेश में महावतों और फील्ड स्टाफ के प्रशिक्षण के साथ-साथ नव पालतू हाथियों की देखभाल और हर्बल उपचार में वन अधिकारियों की सक्रिय रूप से सहायता की है, जिसके परिणामस्वरूप मनुष्य और हाथी के बीच हो रहे कई संघर्षों का समाधान हुआ है। हाल के वर्षों में, उन्होंने मदमस्त हाथियों से निपटने या घायल/बीमार हाथियों की देखभाल करने में असम, बिहार और पश्चिम बंगाल की सरकारों की सहायता की है। उन्होंने विभिन्न सम्मेलनों और कार्यशालाओं में भाग लिया है, जैसे कि वर्ष 1982 में जलदापाड़ा अभयारण्य (पश्चिम बंगाल) में आयोजित हाथियों पर अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला, जून 1993 में मुदुमलाई अभयारण्य (तमिलनाडु) में बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी द्वारा आयोजित एशियाई हाथियों पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी और उत्तरी बंगाल के हाथियों की स्थिति पर दो लेख लिखे हैं। उन्होंने फरवरी, 2001 में एफएओ द्वारा आयोजित बैंकॉक, थाईलैंड में डोमेस्टिकेटेड एशियन एलीफेंट पर अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला में भारत का प्रतिनिधित्व किया। वह एशियन एलीफेंट स्पेशलिस्ट ग्रुप, इंटरनेशनल यूनियन ऑफ कंजर्वेशन ऑफ नेचर (आईयूसीएन) की सदस्य थीं।

5. श्रीमती बरूआ को कई पुरस्कार और सम्मान दिए गए हैं जिनमें असम सरकार का असम गौरव (सर्वोच्च राज्य नागरिक पुरस्कार) 2023 शामिल है। उन्हें जंगली और पकड़े गए दोनों प्रकार के हाथियों के कल्याण और प्रबंधन के लिए वर्ष 1989 में यूनाइटेड नेशन्स एनवायरमेंट प्रोग्राम्स (यूएनईपी) अवार्ड, "ग्लोबल 500 – रोल ऑफ ऑनर" दिया गया। असम सरकार ने 11 जनवरी, 2003 को हाथियों के प्रति आजीवन कार्य के लिए उन्हें "ऑनरेरी चीफ एलीफेंट वार्डन ऑफ असम" के रूप में सम्मानित किया। उन्हें कोलकाता इंटरनेशनल वाइल्डलाइफ एंड एनवायरनमेंट फिल्म फेस्टिवल (केआईडब्ल्यूईएफएफ) द्वारा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया और अपराजिता 2023 के लिए "नेचर्स वॉरियर" जूरी अवार्ड से भी सम्मानित किया गया है।